नारियल चोर

नारियल चोर

एक समय की बात है कि नारियल के पेड़ों के एक सुंदर उपवन के पास एक स्वार्थी चीता अपने घर में रहता था.
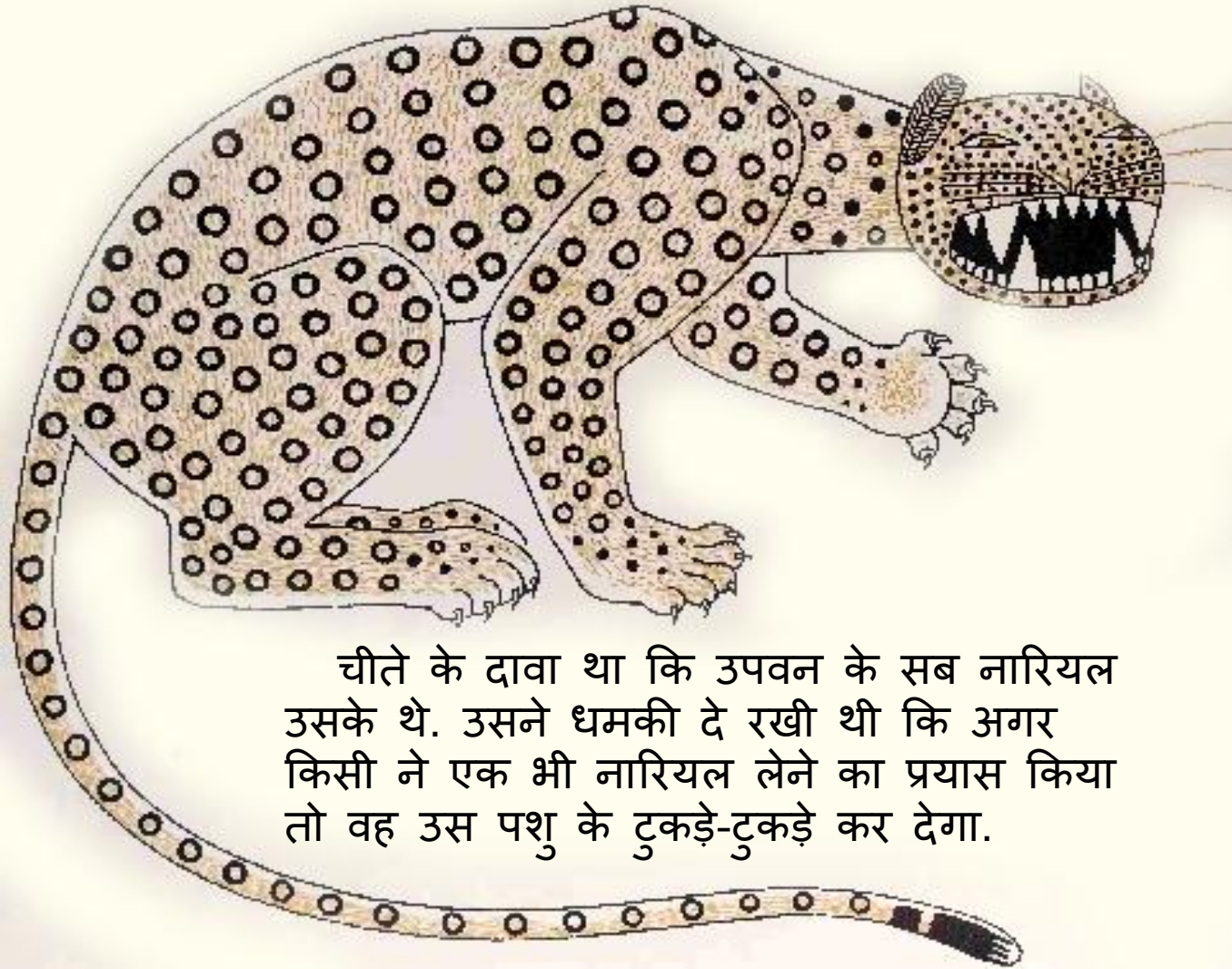
चीते के दावा था कि उपवन के सब नारियल उसके थे. उसने धमकी दे रखी थी कि अगर किसी ने एक भी नारियल लेने का प्रयास किया तो वह उस पशु के टुकड़े-टुकड़े कर देगा.
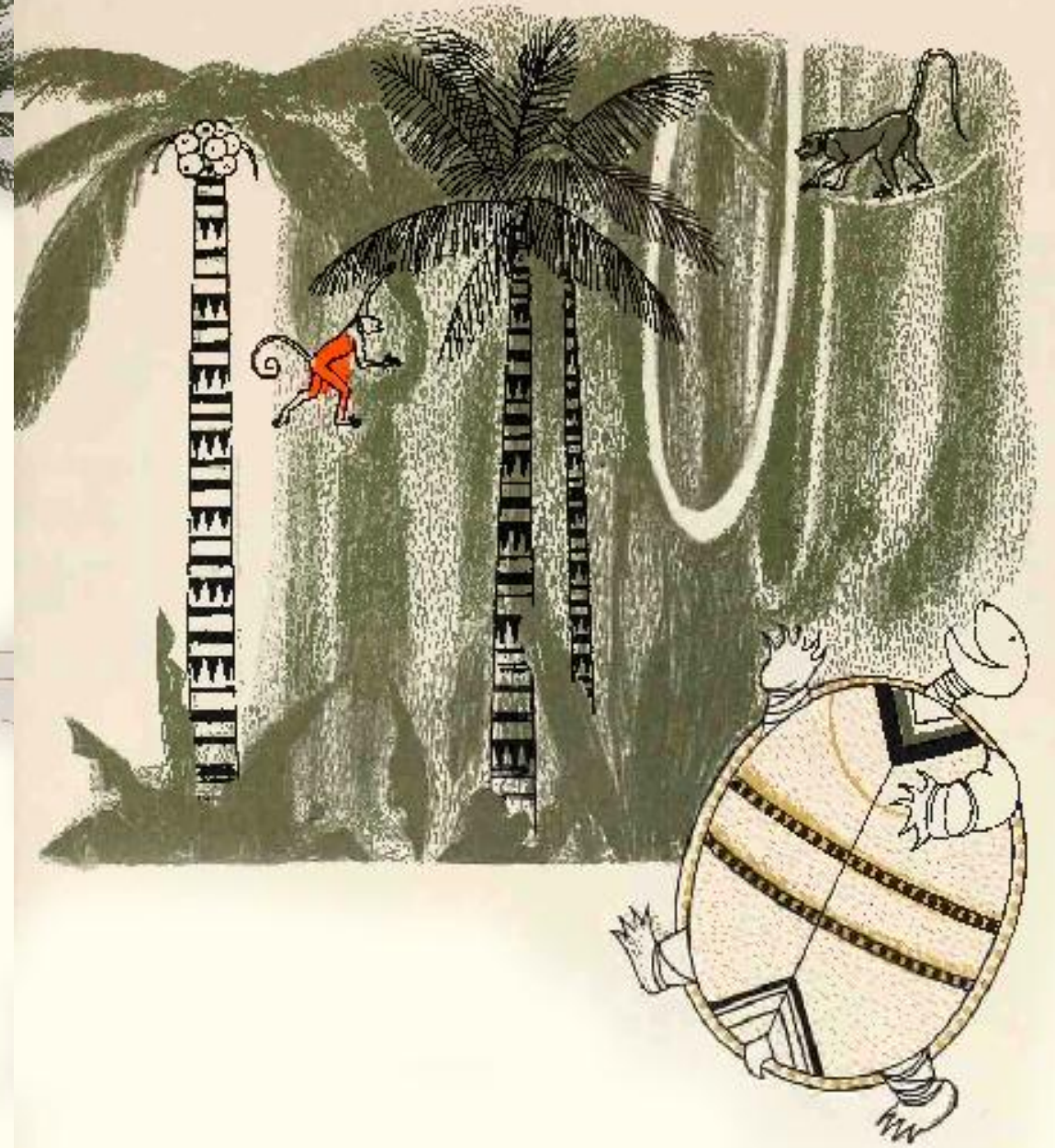
लेकिन कछुए ने जब चीते की धमकी सुनी तो वह बिलकुल भी प्रभावित न हुआ.

एक दिन जब उपवन के नारियल पक गए तो कछुआ अपने सच्चे मित्र कुत्ते से मिलने उसके घर आया. उन्होंने मौसम और जीवन की कठिनाइयों के बारे में बातचीत की.

अचानक कछुए ने कहा, “प्रिय मित्र, चीते के उपवन के नारियल पक गए हैं. क्या तुम्हें नहीं लगता कि उन्हें खाने का यह उचित समय है?”

“मैं मानता हूँ,” कुत्ते ने कहा, “कि बहुत समय से नारियल खाने के लिए मेरा मन ललचा रहा है. लेकिन क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई उन को खाने की कोशिश करेगा चीता उसके साथ क्या करेगा?”

“ओह, वह बेकार की बात है,” कछुए ने कहा. “और, निस्संदेह, वो नारियल उसके नहीं हैं. चिंता न करो. मुझे विश्वास है कि हम कोई न कोई रास्ता ढूँढ़ लेंगे. कल सूर्योदय के समय हम प्रयास करेंगे. लेकिन, मित्र, क्या तुम मेरे घर आकर मुझे जगा सकते हो? तुम जानते ही हो कि सुबह नींद से जागने में मुझे कितनी कठिनाई होती है.”

अगले दिन बहुत सवेरे, एक नया सुंदर थैला लिए कुत्ता आया और उसने कछुए के घर का दरवाज़ा खटखटाया.

“मैं बस तैयार ही हूँ,” कछुए ने उनींदी आवाज़ में कहा. थोड़े समय पश्चात एक बड़ा थैला लिए वह बाहर आया. दोनों मित्र नारियल के झुरमुट की ओर चल दिए.
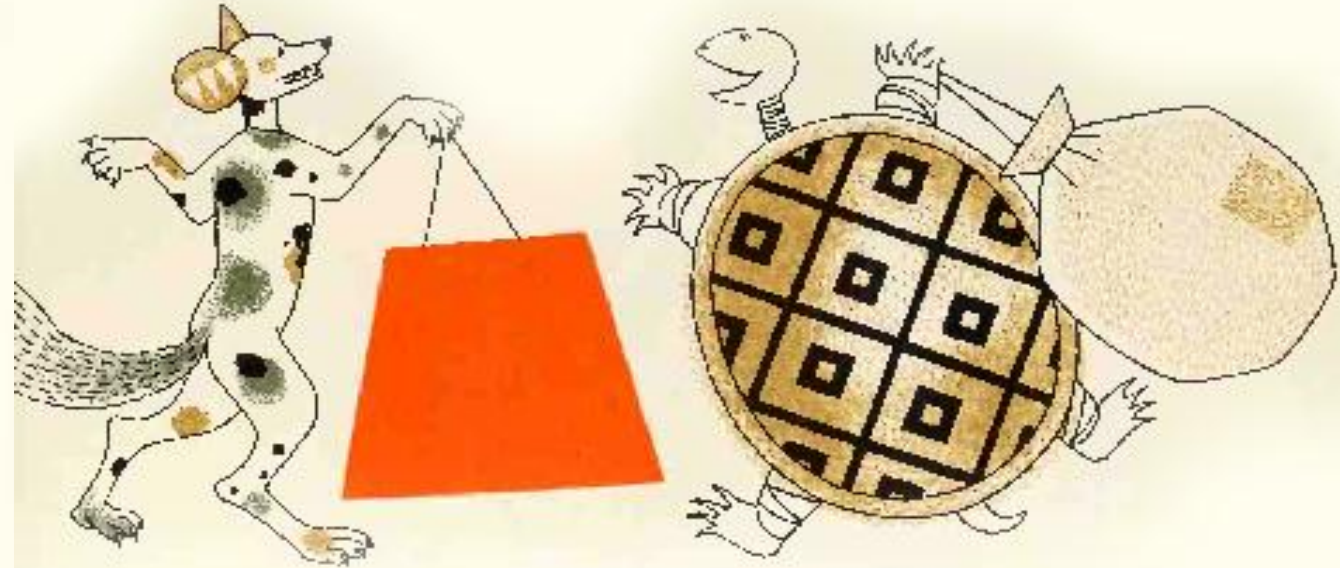
वह दोनों चुपचाप चल रहे थे. नाश्ते से पहले कछुए को बातचीत करना पसंद नहीं था. आखिरकार, उसने अपनी खामोशी तोड़ी.

“एक बात तुम्हें बताना मैं भूल ही गया था,” कछुए ने कहा. “कभी-कभी पेड़ों से टूट कर नारियल नीचे आ गिरते हैं. कोई नारियल तुम्हारे सिर पर भी गिर सकता है और वह पीड़ादायक हो सकता है. प्रिय मित्र, तुम्हें वचन देना होगा कि अगर ऐसा हुआ तो तुम चिल्लाओगे नहीं. बस, दांतों को दबा कर, दर्द सह लोगे.”

कुत्ते ने तिरस्कार से अपने मित्र को देखा. “अरे, अगर चीते ने हमारी आवाज़ सुन ली तो हम मारे जायेंगे,” उसने कहा. “क्या तुम सच में सोचते हो कि मैं इतना मूर्ख हूँ कि चिल्लाने लगूँगा?”

“यह बात कहना सरल है,” कछुए ने उदासी से कहा. “वास्तव में तुम वहाँ से भाग कर अपनी जान बचा सकते हो, लेकिन मैं जल्दी भाग नहीं सकता क्योंकि मेरी टाँगें छोटी हैं.”

“मित्र, घबराओ नहीं, चिल्लाना तो दूर, मैं करहाऊँगा भी नहीं,” कुत्ते ने वचन दिया.

वह नारियल के गिरने की संभावना के विषय में आपस में बात कर ही रहे थे कि ऊँचे पेड़ों के झुरमुट के पास पहुँच गए.

कई बढ़िया, पके हुए नारियल ज़मीन पर पड़े थे. कछुआ उन्हें उठा कर अपने थैले में रखने लगा. खुशी से पूँछ हिलाते हुए, कुत्ता इधर-उधर भागने लगा. नारियलों को खिसका कर वह एक जगह इकट्ठा कर रहा था ताकि कछुआ आसानी से उन्हें उठा सके.
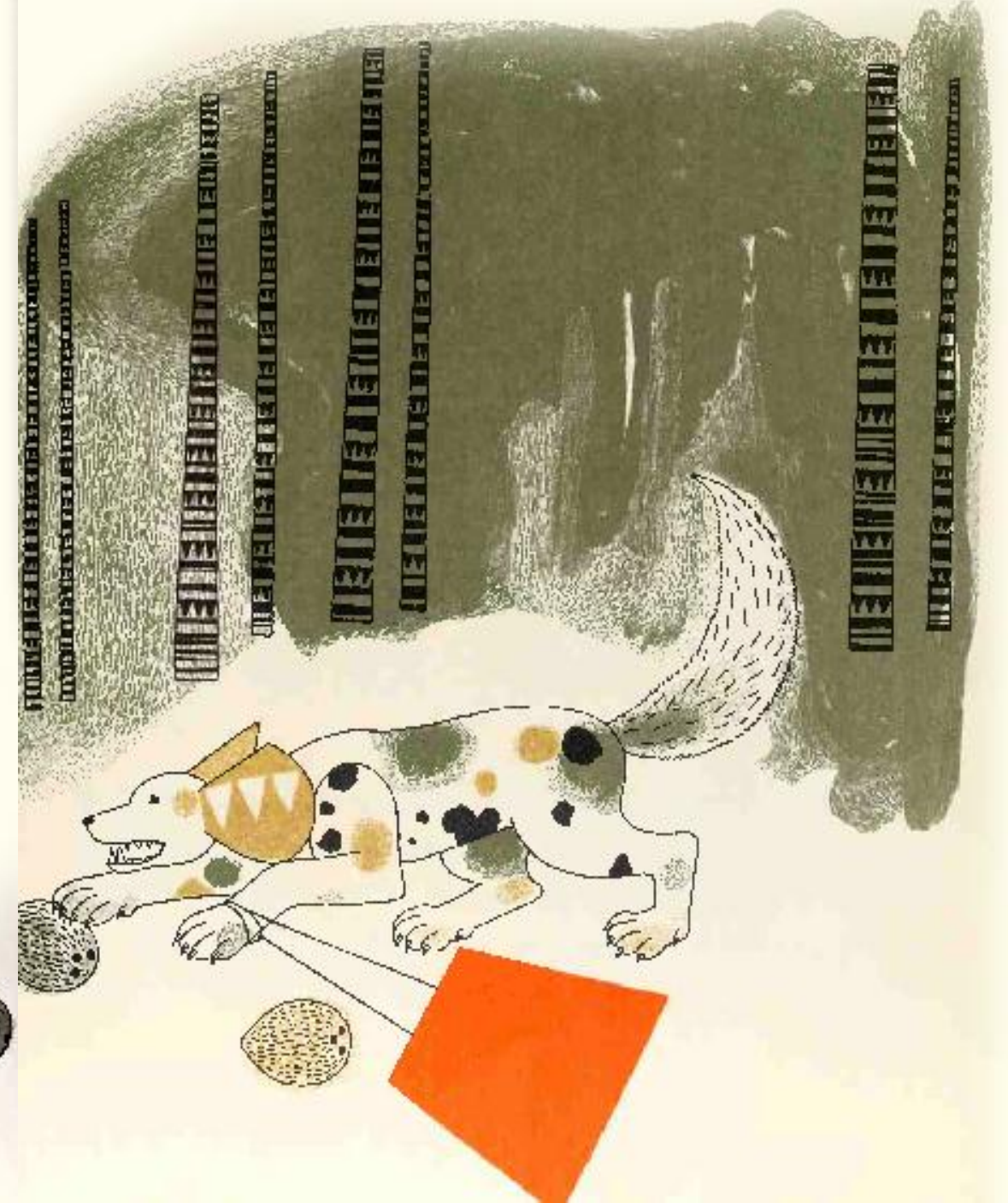
अचानक, ज़ोर से आघात करते हुए, एक नारियल कछुए की पीठ पर आ गिरा. लेकिन मोटे कवच के कारण उसे कोई पीड़ा न हुई और वह चुपचाप नारियल उठाता रहा.

नारियल इतने स्वादिष्ट लग रहे थे और कुत्ता इतना उत्साहित हो गया था कि कछुए की चेतावनी को वह बिलकुल भूल गया.
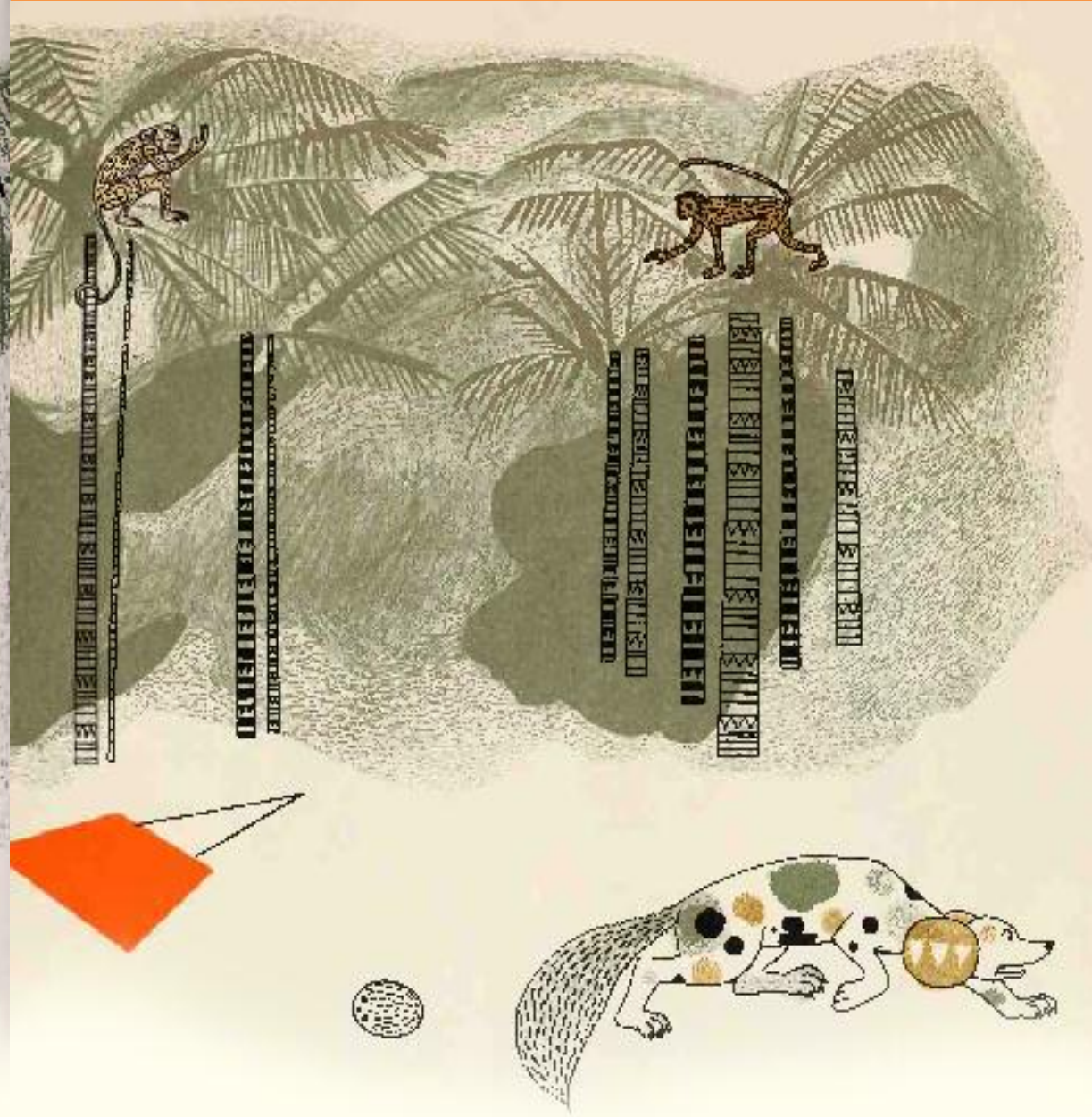
अधिक समय न बीता था कि पत्तों में कुछ सरसराहट हुई और एक बड़ा नारियल फिर से नीचे आ गिरा, इस बार सीधा कुत्ते के सिर पर.

"आऊ! आऊ! आऊ!" कुत्ता चिल्लाया. उसने अपना थैला गिरा दिया और, दुम दबा कर, रिरियाता हुआ वहाँ से भाग खड़ा हुआ. अपने मित्र कछुए के बारे में उसने ज़रा भी न सोचा.

“हाय! उसने मेरे साथ यह क्या किया?” भयभीत कछुए ने फुसफुसा कर कहा. निकट आते हुए चीते की आहट उसे सुनाई देने लगी थी. तेज़ी से रेंगते हुए वह मिमोसा के सूखे पत्तों के नीचे छिप गया. पत्तों के बीच से झाँकते हुए उसने चीते को अपनी ओर आते देखा.

“चोर!” कुत्ते के थैले को देखकर क्रुद्ध चीते ने चीख कर कहा. “मैं तुम्हें पकड़ लूँगा.”

चीता चोर को ढूँढ़ने लगा. कछुआ इतना डर गया था कि वह काँप गया. घबराहट में, मिमोसा के पत्तों के नीचे से निकल कर वह एक बड़े पेड़ की जड़ों के पास पत्तों में छिप गया.

लेकिन उस पेड़ के निकट से निकलते हुए चीते ने पत्तों को हटाया तो कछुआ दिखाई दिया. उसने कछुए की भयभीत आँखों में घूर कर देखा.

“अहा! मैंने तुम्हें पकड़ लिया!” वह चिल्लाया. उसने कुत्ते के थैले को खोला और कछुए को उठा कर थैले में डालने लगा. कछुआ जानता था कि उसका अपना थैला पुराना और घिसा हुआ था.

“कितनी बुरी बात है कि तुम्हें नया थैला इस्तेमाल करना पड़ रहा है,” कछुए ने कहा. “मैं बहुत गंदा हूँ, इसलिए मेरा थैला ठीक रहेगा.”

“तुम सही कह रहे हो,” चीता बोला और उसने कछुए को उठा कर उसके ही थैले में डाल दिया.
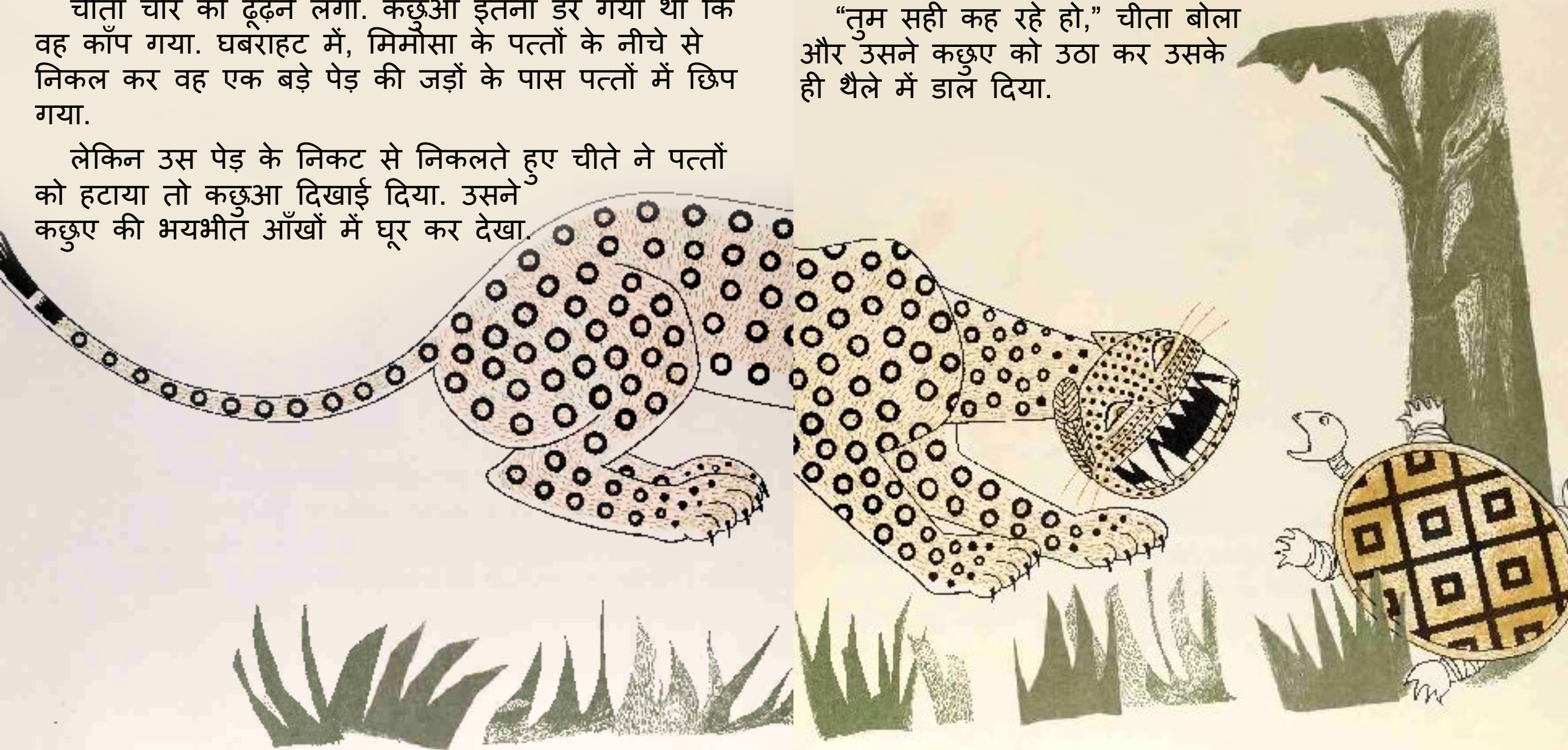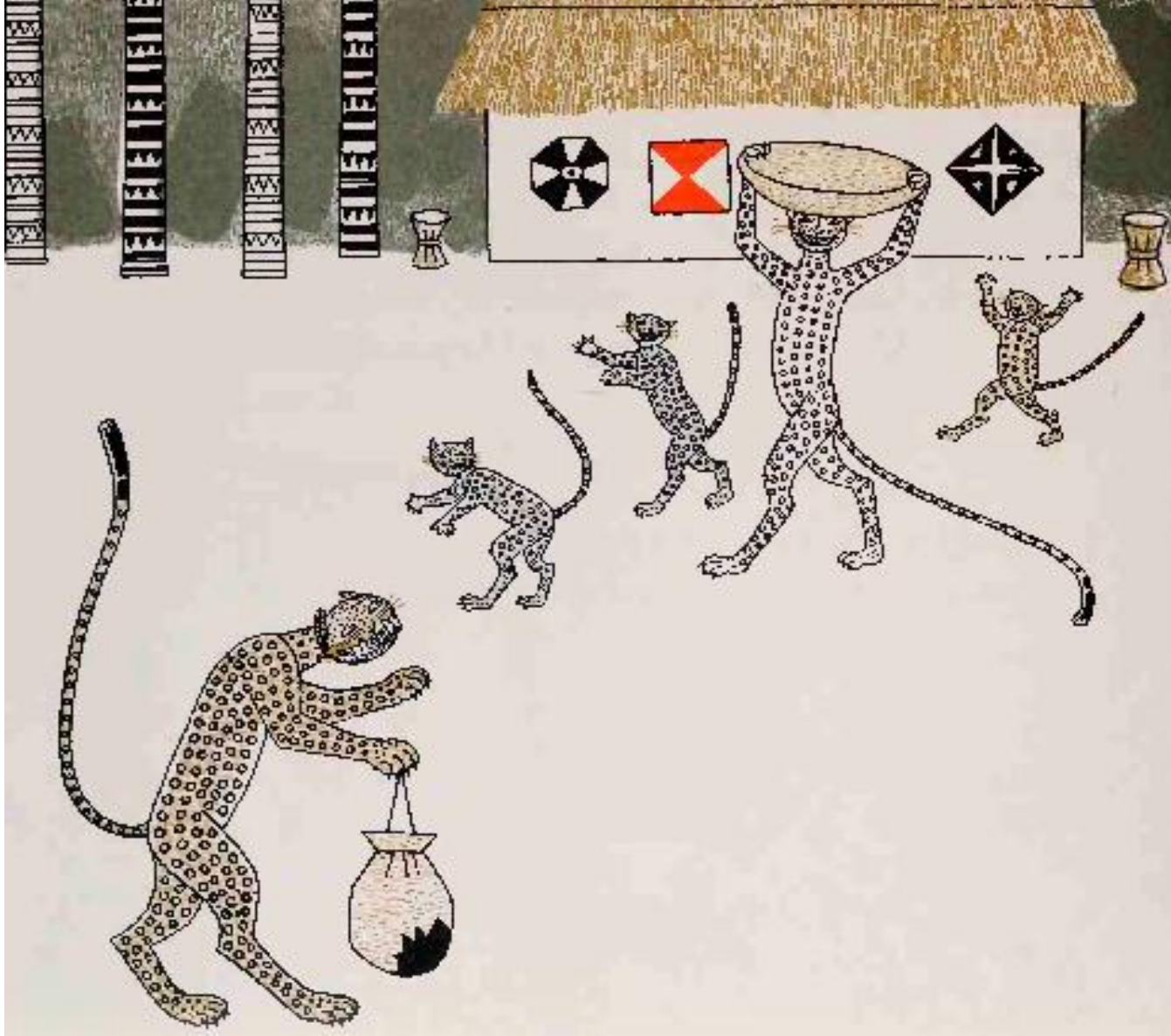
चीता कुछ कदम चला था कि कछुआ थैले को उस जगह से चबाने लगा जहाँ वह अधिक घिसा हुआ था. थोड़े ही समय में उसने थैले में सुराख कर दिया और थैले से बाहर निकल गया.

कछुआ चुपचाप घास में छिपा रहा, जब तक कि चीता आँखों से ओझल नहीं हो गया. फिर वह सोचने लगा कि किस तरह उसके मित्र ने उसे असहाय छोड़ दिया था. दुःखी, और थोड़ा नाराज़, कछुआ कुत्ते को ढूँढ़ने के लिए चल पड़ा.

विजयी भाव से चीता घर आया और आते ही परिवार वालों को आदेश देने लगा. उसने बीवी को आदेश दिया कि तुरंत बरतन में पानी भर कर आग पर रख दे. उसने बच्चों को कहा कि उसके मित्रों को कछुए के माँस की दावत करने के लिए निमंत्रण दे कर आएँ.

जब उसके मित्र घर आ गए तो चीते ने बड़ी शान से थैला खोला. परंतु थैले में से कुछ नारियल निकले, कछुआ नहीं. उसके मित्र हैरान हो गए. पहले तो मेहमान ज़ोर से हँसने लगे. वह चीते को पसंद नहीं करते थे.

क्योंकि वह स्वार्थी और निर्दयी था. फिर उन्हें लगा कि चीते ने उनका मज़ाक उड़ाया था. गुस्से में चिल्लाते, गुर्राते, चिंघाड़ते हुए सब पशु उसके घर से चले गए.

इस बीच कछुए ने कुत्ते को ढूँढ़ लिया था. कुत्ते ने अपने व्यवहार के बारे में विस्तार से समझाने का प्रयास किया. आखिरकार, उसने स्वीकार कर लिया कि वह घबरा गया था. “देखो,” उसने ईमानदारी से कहा, “अब अगर मुझ पर नारियल गिरा तो मैं कोई शोर नहीं करूँगा.”

उस पल से कुत्ता और कछुआ और भी प्रिय मित्र बन गए.

कुछ समय बाद, एक सुहावने दिन, उन्होंने तय किया कि वह दुबारा नारियल पाने का प्रयास करेंगे. अगली सुबह, बहुत सवेरे, कुत्ता कछुए के घर आया. एक बार फिर वह दोनों नारियल के पेड़ों के झुरमुट की ओर चल दिये.
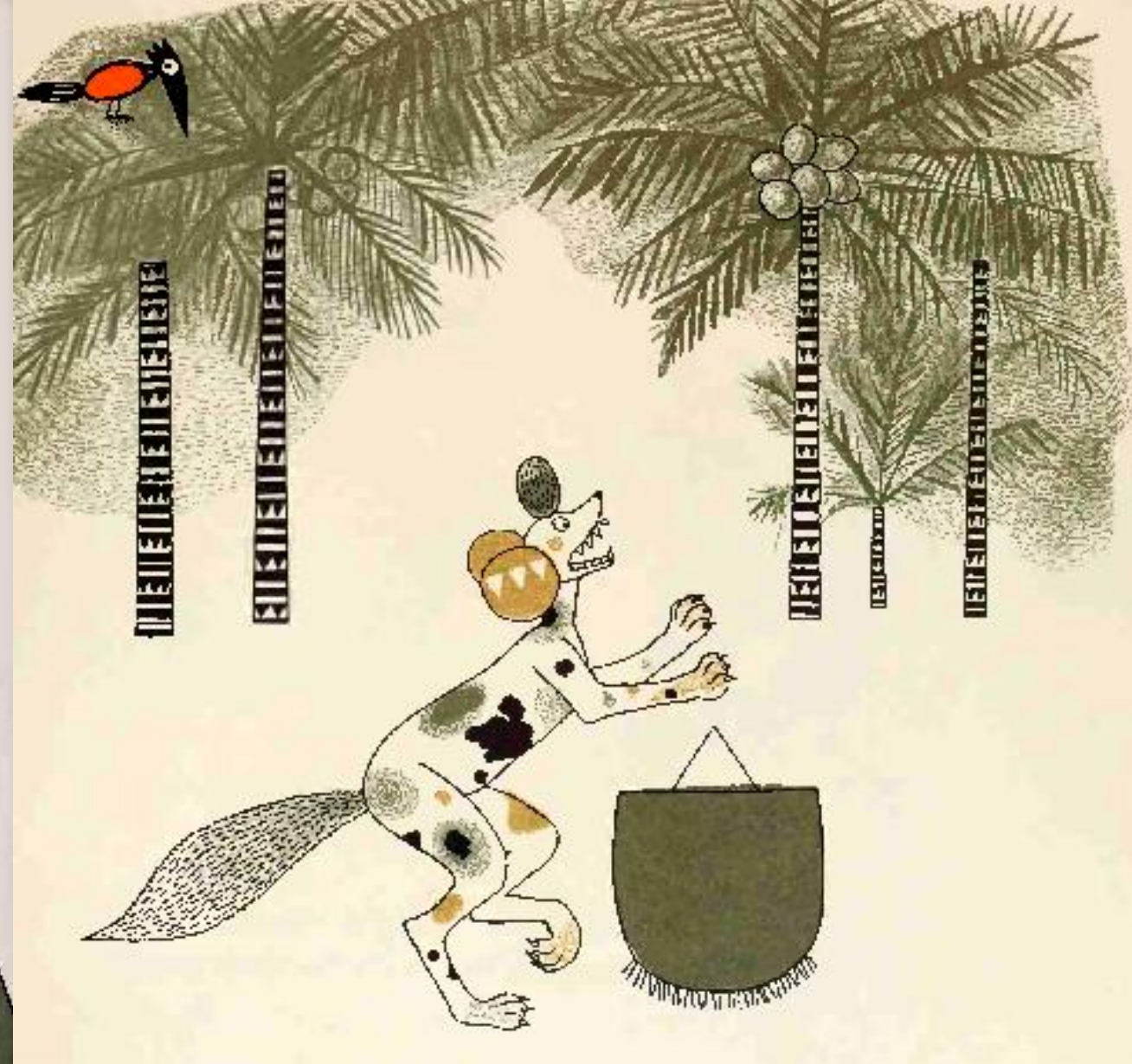
जब वह वहाँ पहुँचे तो सब शांत था. कई बढ़िया नारियल ज़मीन पर गिरे पड़े थे. दोनों मित्र झटपट अपने थैले में नारियल भरने लगे.

अचानक उन्होंने पत्तों में कुछ सरसराहट सुनी और एक बड़ा नारियल सीधा नीचे कुत्ते के सिर पर आ गिरा. कुत्ता अपने सारे वचन भूल गया. दुम दबा कर, चिल्लाता हुआ वह भाग गया.
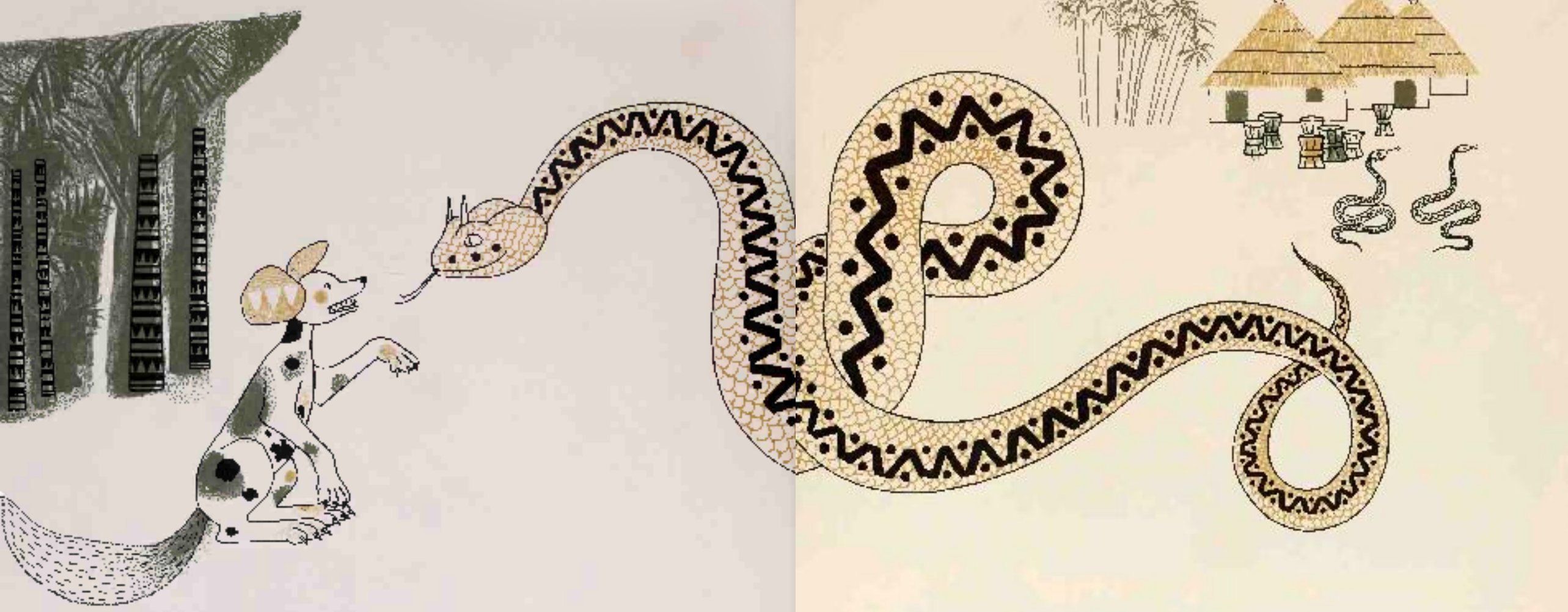
जब उपवन से दूर एक सुरक्षित जगह पहुँच कर वह रूका तो उसकी आत्मा उसे कोसने लगी. वह इतना कायर कैसे हो गया? वह इतनी मूर्खता कैसे कर बैठा? कछुआ अवश्य ही चीते के चंगुल में फंस जायेगा. क्या वह अपने मित्र को बचा सकता था? अपनी करनी पर वह इतना दुःखी था कि उसने किसी से सलाह लेने की बात सोची.

उस जंगल में एक बहुत वृद्ध और बहुत ही बुद्धिमान साँप रहता था. कुत्ता उस साँप के घर गया. यद्यपि उसे लज्जा आ रही थी पर उसने सारी बात साँप को बताई. वृद्ध साँप ने सोचा और खूब सोचा. फिर उसने कुत्ते को एक योजना बताई.

“सागर के किनारे जाओ,” उसने कहा, “और बहुत सारे बड़े शंख और पत्थर इकट्ठे करो. उन सब को एक बेल के साथ बाँध कर एक माला बना लो. उस माला को अपने गले पर पहन लो. जब भी तुम चलोगे तो माला खूब शोर करेगी. फिर नदी किनारे जाकर प्रतीक्षा करो. जब चीता नदी के पास आए तो तुम पत्थरों और शंखों से जितना शोर कर सकते हो उतना शोर करना. चीता समझेगा कि पानी में छिपा कोई भयंकर दैत्य शोर मचा रहा है और वह डर कर भाग जायेगा. शेर भी नदी के पास आने का साहस न कर पायेगा. इस तरह तुम्हारा मित्र बच जायेगा.”

इतनी विचारशील सलाह पा कर कुत्ता बहुत प्रसन्न हुआ, यद्यपि उसे समझ न आया था कि साँप की योजना किस प्रकार काम करेगी. खुशी से भौंकते हुए, वह सागर तट की ओर जितना तेज़ भाग सकता था वह भागा. वहाँ पहुँच कर वह पत्थर और शंख इकट्ठे करने लगा.

जैसा कुत्ते को संदेह था, चीते ने कछुए को पकड़ लिया था. कछुए ने बचने का प्रयास किया था पर वह सफल न हुआ था. इस बार चीता अपना थैला साथ लेकर आया था.

एक बार फिर, बढ़िया दावत खाने के लिए, चीते के घर में पशु इकट्ठे हुए. लेकिन जैसे ही अतिंम अतिथि आया, चीते की पत्नी ने देखा कि घर में पानी नहीं था. चीते ने अपने बच्चों को पानी लाने के लिए नदी की ओर भेजा. जब मेहमान प्रतीक्षा कर रहे थे तब चीता उन्हें बताने लगा कि उसने कछुए को किस तरह नारियल के पेड़ के नीचे पकड़ा था. कहानी सुनते-सुनते, कछुए को पहले शेर ने अपने पंजों में दबोचा, फिर लकड़बग्घे ने अपने हाथों में पकड़ा.

अचानक बाहर से चीखने और चिल्लाने की डरावनी आवाज़ें सुनाई दीं. डर से सहमे और घबराये हुए चीते के बच्चे नदी से लौट आए थे. बड़ी कठिनाई से वह बता पाए कि एक भयंकर दैत्य ने उन पर हमला करने का प्रयास किया था.
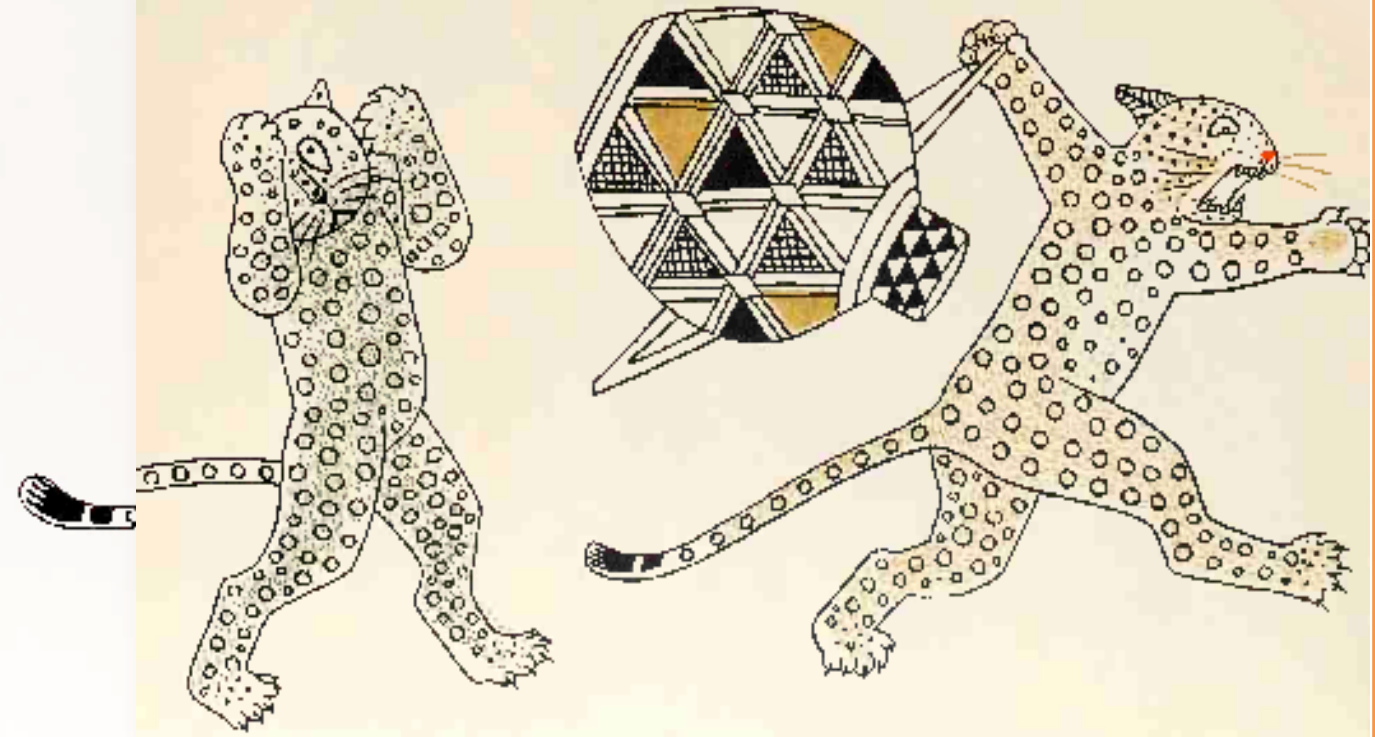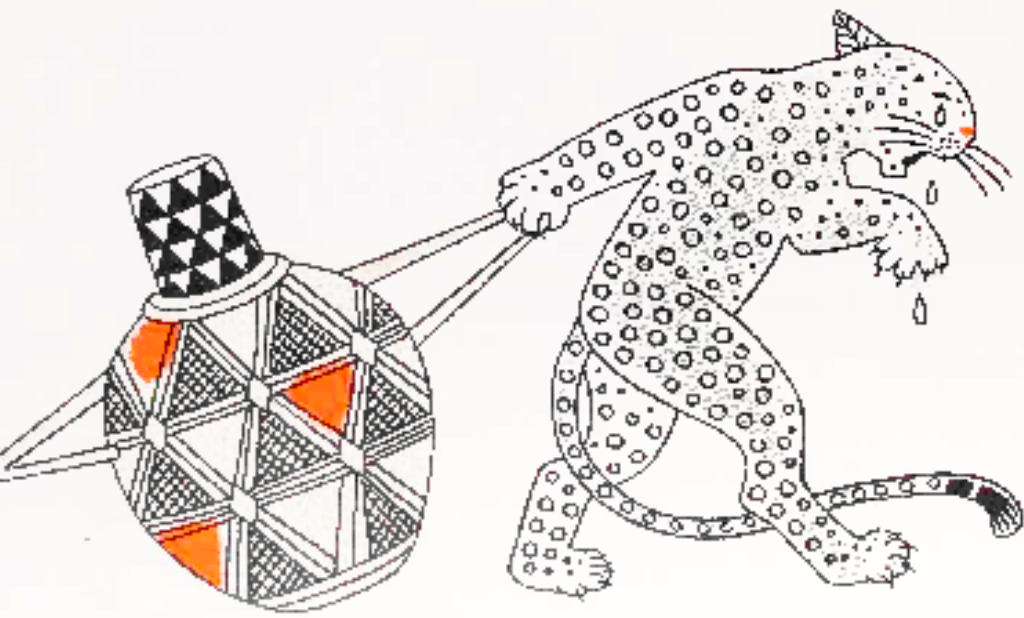
उनकी बात सुन कर लकड़बग्घा बच्चों की हँसी उड़ाने लगा, “मूर्ख, नन्हे बिलौटे, मुझे पता न था कि तुम इतने डरपोक हो.” और वह स्वयं नदी की ओर चल दिया. शीघ्र ही वह लौट आया, वह थर-थर काँप रहा था. वह इतना भयभीत था कि कुछ कह नहीं पाया.

फिर गोरिला गया, लेकिन वह भी तुरंत वापस आ गया. वह चिल्ला रहा था, काँप रहा था.

शेर बोलने लगा. “यह देखने के लिए कि क्या तुम सब कायर हो,” उसने कहा, “मुझे ही नदी के पास जाना होगा.”

शीघ्र ही वह लौट आया, उसके गले के बाल खड़े थे और आँखों में डर था. “मैं कई वर्षों से यहाँ रहा हूँ,” उसने भर्राई आवाज़ में कहा, “लेकिन ऐसे दैत्य की आवाज़ कभी नहीं सुनी.”

सब जानवर भयभीत थे. “हम क्या कर सकते हैं?” उन्होंने एक दूसरे से पूछा.

मंद गति से डोलते हुए हाथी खड़ा हुआ. “मैं किसी से नहीं डरता,” वह चिंघाड़ा. “मैं नदी तक जाऊँगा और अपनी सूँड में पानी भर कर लाऊँगा.”

डरे-डरे से बाकी जानवर उसकी प्रतीक्षा करने लगे. कोई एक शब्द भी न बोला.

जल्दी ही हाथी लौट आया. सहमी हुई आवाज़ में उसने कहा कि उसने बहुत डरावना शोर सुना था. वह इतना डर गया था कि अपनी सूँड नीचे भी न कर पाया था.
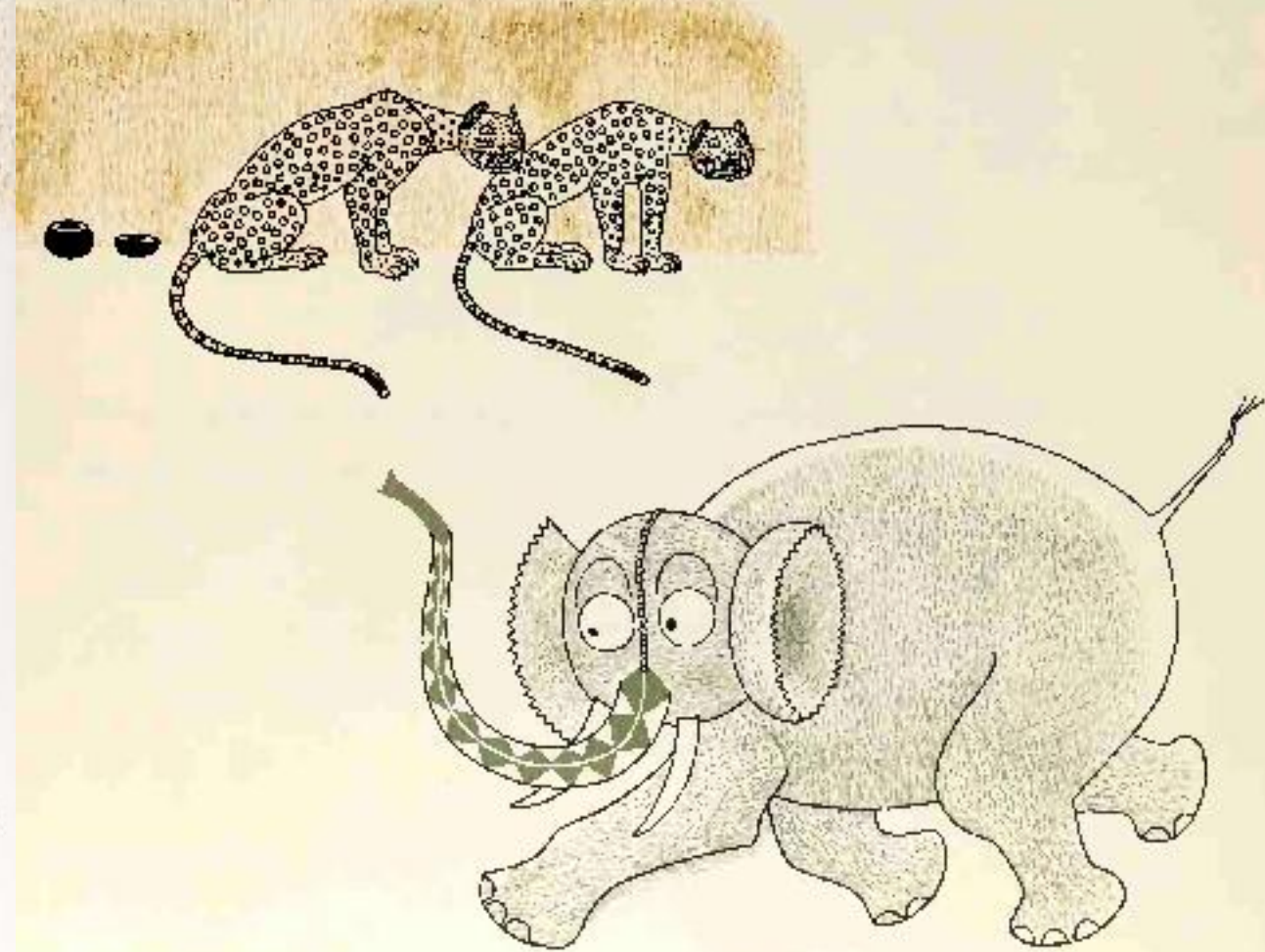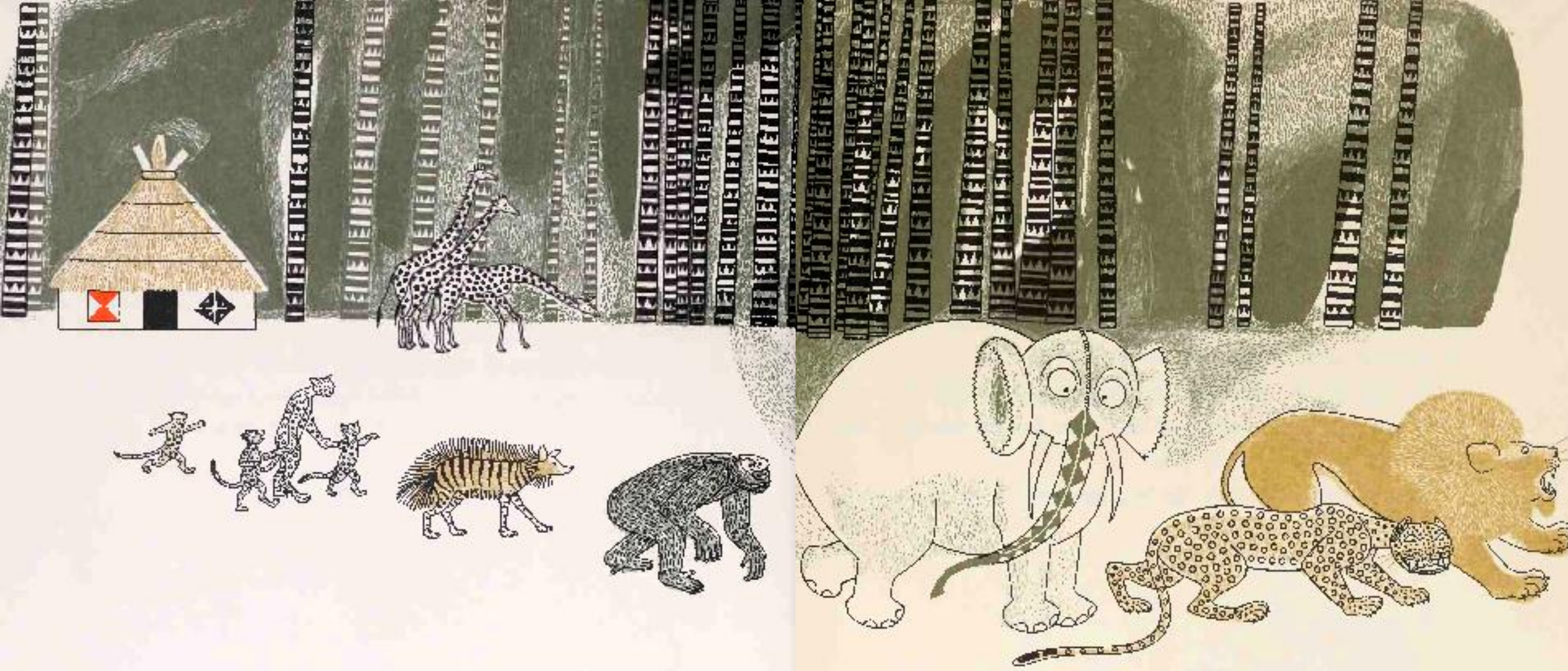
सब पशु भय से थर-थर काँप रहे थे. उन्होंने चीते की ओर देखा. उसने धमकी दी थी कि जो कोई उसके नारियल ले जाने का प्रयास करेगा वह उस पशु के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा, इसलिए उसे ही दैत्य से लड़ना चाहिए.

लेकिन चीता जितना स्वार्थी था उतना ही वह कायर था. नदी के पास अकेले जाने का उसमें साहस नहीं था. "मेरे प्रिय मित्रो," उसने झटपट कहा, "मेरी एक योजना है. अगर हमें उस दैत्य को पकड़ कर मारना है तो हमें एक जुट होकर नदी के पास जाना होगा."

सब पशुओं में खूब हलचल मच गई. कुछ को चीते की योजना ठीक लगी. लेकिन जो पशु डरपोक थे, वह नदी के पास जाना नहीं चाहते थे. अंततः सारे पशु नदी की ओर चल दिये, शेर सबसे आगे था, उसके पीछे चीता और हाथी और अन्य सब पशु थे.

जब अंतिम भयभीत पशु भी जा चुका था तब कछुआ, जिसे वह सब भूल गए थे, चुपके से दरवाज़े से बाहर आ गया और जल्दी-जल्दी चीते के घर से जितनी दूर जा सकता था चला गया.

जब वह दूर एक झाड़ी में पहुँचा तो उसे प्रसन्नता से भोंकने की आवाज़ सुनाई दी. यह उसका मित्र कुत्ता था जो दौड़ता हुआ उसके पास आया और उछलने-कूदने लगा, अपनी पूँछ हिलाने लगा.

"मैंने उन्हें मूर्ख बनाया," कुत्ता चिल्लाया. "वह दैत्य मैं ही था."

कछुए ने अपने मित्र को आश्चर्य से देखा.

"तुम्हें उन्हें अभी देखना चाहिए," कुत्ते ने हँसते हुए कहा. "वह डर से काँपते हुए नदी किनारे खड़े हैं. चीता शेर को धकेल रहा है, हाथी चीते को धकेल रहा है, गोरिला हाथी को धकेल रहा है और लकड़बग्घा गोरिले को धकेल रहा है."

"मेरे प्रिय मित्र," कछुए ने कहा, "मैंने सोचा कि तुम ने मुझे छोड़ दिया था. उसके बजाय तुम ने मेरी जान बचाई. मुझे विश्वास हो गया था कि मेरा अंत निकट है, पर तुम ने मुझे बचा लिया. तुम्हारे उपकार का बदला मैं कैसे चुका सकता हूँ?"

"अरे, यह तो कुछ भी नहीं है," कुत्ते ने विनम्रता से कहा, "मित्र के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ."

और दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़े वहाँ से चल दिये.

समाप्त